© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

बौद्ध ग्रन्थों में श्रेणी–संगठन

डॉ0 दानपाल सिंह
0177 A काजीपुरखुर्द,
गोरखपुर, उ0प्र0।

बौद्ध–ग्रन्थों में आए संघ, गण, श्रेणी, शब्द श्रम संगठन के परिचायक हैं। इन संगठनों का अस्तित्व बौद्ध–युग से पूर्व भी था। इस संबंध में मुख्य प्रमाण वैदिक साहित्य में 'श्रेष्ठि'[1] तथा 'गण'[2] शब्दों के प्रयोग हैं। यह ज्ञातव्य है कि परवर्ती साहित्य में "श्रेष्ठिन" शब्द श्रेणी प्रधान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है एवं गण से अभिप्राय किसी नैगम संगठन से है।

"श्रेणी" शब्द का अर्थ उनके, प्रकार, संगठन और महत्व :

"श्रेणी" वह विशिष्ट शब्द है जो व्यापारियों एवं शिल्पियों के संगठन का परिचायक है।[3] इसकी परिभाषा इस प्रकार से की जा सकती है– समान या भिन्न जाति के परन्तु समान व्यापार और व्यवसाय अपनाने वाले लोगों का निगम। यह संगठन मध्य कालीन यूरोप के "गिल्ड्स" से साम्य रखता है और श्रेणी शब्द के द्वारा उसका बोध हो सकता है। प्राचीन बौद्ध एवं ब्राह्मण साहित्य व अभिलेखों में श्रेणियों का उल्लेख है जिससे इस विचारधारा की पुष्टि होती है कि लगभग सभी महत्वपूर्ण व्यावसायिक शाखायें श्रेणियों के रूप में संगठित थीं।

यह निश्चित करना संभव नहीं है कि श्रम संगठन अथवा श्रेणियां कितने प्रकार की थी किन्तु इन प्रकारों में सभी आवश्यक व्यवसायों का समावेश था। श्रेणियों की संख्या को लेकर मुख्यतः हमें जातकों[4] और बुद्धिस्ट इंडिया में वर्णित प्रकारों पर ही निर्भर होना पड़ता है जो इन श्रेणियों की संख्या अठारह[5] बताते हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन करना आवश्यक है।

1– **बढ़ई** : इस श्रेणी में सिर्फ कारपेन्टर ही नहीं वरन् पेटिका निर्माण, चक्र निर्माण, गृहनिर्माता व सभी प्रकार के वाहन बनाने वाले आदि सम्मिलित हैं।

2– **लोहार** : सभी प्रकार के लोहे से बनने वाले औजार, यंत्र हथियार, कृषि कार्य में उपयोगी सामान बनाने वाले उद्यमी एवं सोना, चांदी एवं अन्य धातुओं का कार्य करने वालों का संगठन।

3– पत्थर का कार्य करने वाले : ये गृह निर्माण, पत्थर की सीढ़ियां, जलाशय आदि के निर्माण कार्य किया करते थे।

4– जुलाहे या बुनकर : ये लोग पहनने के वस्त्र की ही नहीं अपितु निर्यात के लिए मलमल, सिल्क के कीमती वस्त्रों पर बारीक जरी की कढ़ाई करके वस्त्र, कम्बल, चादर एवं कालीन का निर्माण करते थे, इनका भी अपना संगठन था।

5– चर्मकार : ये प्रमुखतः चमड़े के जूते, चप्पल एवं चमड़े से निर्मित कीमती वस्तुएं यथा–दस्ताने, टोपियां कोट आदि बनाते थे।

6– कुम्हार : ये हर प्रकार के मिट्टी के बर्तन तथा प्याले, तश्तरी, थाली इत्यादि बर्तन जो दैंनदिन उपयोग में आते उनका निर्माण करते व बेचते थे।

7– दन्तकार : हाथी दांत से निर्मित होने वाली व साधारण उपयोग में आने वाली वस्तुओं एवं साथ ही बहुमूल्य नक्काशी का कार्य करने वाले लोग।

8– रंगरेज : वे उद्यमी जो जुलाहों या बुनकरों द्वारा तैयार किये वस्त्रों को विभिन्न रंगों में रंगते थे।

9– रत्नकार (जौहरी) : ये लोग विभिन्न रत्नों, जवाहरातों को अपने हस्त कार्य से विभिन्न स्वरूप प्रदान कर क्रय–विक्रय किया करते थे।

10– मछुए अथवा मछुवारे व नाविक : जिनकी आजीविका मुख्यतः मछली के शिकार पर निर्भर थी। ये लोग नदियों में मछली मारकर उसे बेचने का कार्य करते थे।

11– कसाई : इनकी बड़े–बड़े बूचड़खाने एवं मांस विक्रय की दुकाने थी।

12– शिकारी अथवा बहेलिये : ये पशु पक्षियों को पकड़कर उन्हें बाजार में बेचते थे जैसे, हाथी, घोड़े एवं अन्य पशु। उसके अतिरिक्त हाथी, दांत, पंख बहुमूल्य लकड़ी इत्यादि की अत्याधिक मांग इनके धंधें को प्रोत्साहित करती थी जिसमें इन्हें अत्यधिक लाभ होता था।

13– रसोइया एवं हलवाई : इस कार्य को करने वाले भी संभवतः श्रेणी के रूप में संगठित थे परन्तु ऐसा कोई उद्धरण नहीं मिलता।[6]

14– नाई : ये लोग भी संगठित थे और अधिकतर इत्र व सुंगधियों का कार्य करते, इसके अतिरिक्त विशेषतः सम्पन्न वर्ग द्वारा प्रयुक्त साफे, पगड़ी इत्यादि व्यवस्थित रूप से बांधने में निपुण थे।

15– मालाकार (माली) : इनकी आजीविका पुष्प बेचने, मालाएं बनाने एवं बागीचों के रख–रखाव से चलती थी। परन्तु ये भी श्रेणीबद्ध थे।

16– सार्थ सहित व्यापारी : सबसे अधिक संगठित इसी वर्ग के लोग थे। संख्या एवं सम्पन्नता की दृष्टि से भी ये लोग अन्यों की तुलना में कही बढ़कर थे। बड़े–बड़े सार्थो (कारवां) सहित ये जल एवं स्थल मार्गों से एक दूसरे राज्यों एवं राष्ट्रो को जाते थे।

17– बसकर (बांस का काम करने वाले) : जो बांस की टोकरियां आदि निर्माण के व्यवसाय में संलग्न थे।

18– चित्रकार : इनमें अधिकतर घरों व मंदिरों की रंगाई पोताई करने वाले थे। यही लोग दीवालों पर चित्रकारी एवं सजाने का कार्य भी किया करते। लकड़ी एवं पलस्तर पूर्व दीवालों की नक्काशी व चिकारी में ये निपुण थे।

अनेक जातक कथाएं सामुद्रिक व्यापारियों के संगठन का उल्लेख करते हैं कि किस प्रकार वे अपने प्रधान के अन्तर्गत जहाज प्राप्त कर अपनी व्यापारिक यात्रा पर निकले।[7] अन्य जातकों में व्यापारियों की वाणिज्य विषयक गतिविधियों की चर्चा है।

"सेट्ठि" शब्द जो बौद्ध साहित्य में बहुधा उपलब्ध होता है, व्यापारी वर्ग के प्रतिनिधि के अर्थ मे लिया जाना चाहिए क्योंकि चुल्लवग्ग में राजगृह के सेट्ठि की बीमारी का वर्णन व अनाथपिण्डक को महा–सेट्ठि कहा जाना, यह प्रदर्शित करता है कि सेट्ठि शब्द का प्रयोग सम्मानीय व्यक्ति के लिए किया है। "सेनियो" शब्द श्रेणी प्रमुख और जेट्ठक अथवा श्रेणी या श्रेणी के बुजुर्ग व्यक्ति के लिए आया है।[8] श्रेणी प्रमुख की समाज में विशिष्ट स्थिति थी जो आज भी जैनो में यथावत् है।[9] इसके अतिरिक्त बुद्ध की स्वयं की जिन्दगी में भी श्रेणियों का अत्यधिक महत्व रहा है, इसके साक्ष्य हैं, जिससे श्रेणियों की प्रमुखता सिद्ध हो जाती है।[10]

"वणिज दुकानदार और दलाल" के व्यवसाय के बारे में चर्चा करते हुए, श्रीमती रिज डेविड्स ने लिखा है कि ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जो "श्रेणी" अथवा "हंसा"[11] संघ की तरह के किसी सामूहिक संगठन की ओर संकेत करता हो।[12] निःसंदेह उन्होंने जातकों के कुछ उदाहरणों का उल्लेख किया है किन्तु स्पष्ट ही वे उन्हें अस्थायी समागम मानती हैं।

कुछ जातक कथायें श्रेणियों के संगठन के संबंध में और भी रोचक जानकारी देती है। समुद्ध वणिज जातक[13] से ज्ञात होता है कि बनारस के पास एक हजार परिवार वाले बढ़ाईयों का एक नगर था, जिनमें पाँच सौ परिवारों के ऊपर एक प्रधान कारीगर था। बाद में वे उस नगर को छोड़ एक अन्य द्वीप को स्थानांतरित हो बस गये थे। यह श्रेणियों की भ्रमणशीलता का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त यह भी इस उदाहरण से प्रमाणित होता है कि कभी–कभी एक स्थान के शिल्पियों के एक ही वर्ग में एक से अधिक संगठन भी होते थे यहाँ यह विचार उठ सकता है कि दोहरा संगठन केवल

शिल्पियों की बड़ी संख्या के कारण था, किन्तु जातक कथाओं में एक ही संगठन के अंतर्गत रहने वाले एक हजार जनों के उदाहरण भी हैं।[14]

कुछ अन्य तथ्य यह भी प्रकट करते हैं कि जेट्ठक का पद कभी–कभी परम्परागत होता था। एक स्थान पर आया है कि प्रधान नाविक के मर जाने पर उसका पुत्र नाविकों का नेता बना।[15] इन जेट्ठकों के आपसी झगड़ों और प्रतिद्वन्द्विता के भी उल्लेख मिलते हैं। दो जातकों के प्रारंभिक आख्यानों में इस विषय की रोचक कथाएं हैं कि किस प्रकार महात्मा बुद्ध कभी–कभी उनमें समझौता कराते थे संभवतः ऐसे झगड़े सामान्यतः होते रहते थे जिससे उनका निपटारा करने के लिए विशेष न्यायाधिकरण नियुक्त करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

जिन अठारह श्रेणियों का उल्लेख किया गया है उनकी विद्यमानता के बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। जातकों और अन्य बौद्ध साहित्य में केवल व्यापारियों एवं शिल्पियों के संगठन की ही चर्चा आमतौर पर मिलती है। पर फिर भी इससे यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि इन संस्थाओं का व्यापक संगठन था।

संदर्भ सूची

1– ऐतरेय ब्राह्मण, 3.30, 3 एवं तेतरीय ब्राह्मण, 3, 14, 10
2– वाजसनेयी संहिता, पृ0 16, 25
3– प्राचीन भारत में संघटित जीवन, पृ0 18
4– मूगपक्ख जातक, जिसमें 18 श्रेणियों के साथ राजा को यात्रा करते हुए बताया है।
5– बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ0 57–58
6– बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ0 59
7– जातक, वलाहस्स, पृ0 127 जातक पण्डर, पृ0 75 एवं सप्पारक, पृ0 136
8– जनरल ऑफ दि बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, जे0एम0 समद्दार का लेख, पृ0 39
9– हापकिन्स, ई0 डब्ल्यू : इण्डिया ओल्ड एण्ड न्यू0 पृ0 87
10– जनरल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, पृ0 39
11– जर्मन शब्द जो व्यापारिक नगरों के संगठन के लिए प्रयुक्त किया जाता था।
12– जनरल ऑफ ऐशियाटिक सोसायटी, 1901, पृ0 868–71
13– जातक, भाग 4, पृ0 158
14– जातक, नं0 3, पृ0 281
15– जातक, नं0 4, पृ0 136